जै कन्हैयालाल की

(लम्बी तेवरी–तेवर शतक)

रमेशराज

जै कन्हैयालाल की

कृष्ण-रूप में कंस जैसे हर शासक के प्रति-

लम्बी तेवरी (तेवर-शतक)

तेवरीकार-रमेशराज

प्रथम संस्करण-२०१२, मूल्य-४० रुपये, सर्वाधिकार-लेखकाधीन

सार्थक-सृजन प्रकाशन, 15/109, ईसानगर

निकट-थाना सासनी गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)

मोबा.- 09634551630

परिचय

पूरा नाम-रमेशचन्द्र गुप्ता
जन्म-15 मार्च 1954, गांव-एसी, अलीगढ़
शिक्षा-एम.ए. हिन्दी, एम.ए. भूगोल
सम्पादन-तेवरीपक्ष (त्रैमा.)
सम्पादित कृतियां 1. अभी जुबां कटी नहीं (तेवरी-संग्रह) 2. कबीर ज़िन्दा है (तेवरी-संग्रह) 3. इतिहास घायल है (तेवरी-संग्रह) 5-एक प्रहार: लगातार (तेवरी संग्रह)
स्वरचित कृतियां- रस से संबंधित-1. तेवरी में रससमस्या और समाधान 2-विचार और रस (विवेचनात्मक निबंध) 3-विरोध -रस 4. काव्य की आत्मा और आत्मीयकरण
तेवर-शतक-लम्बी तेवरियां-1. दे लंका में आग 2. जै कन्हैयालाल की 3. घड़ा पाप का भर रहा 4. मन के घाव नये न ये 5. धन का मद गदगद करे 6. ककड़ी के चोरों को फांसी 7.मेरा हाल सोडियम-सा है 8. रावण-कुल के लोग 9. अन्तर आह अनंत अति 10. पूछ न कबिरा जग का हाल
शतक-1.ऊघौ कहियो जाय (तेवरी-शतक) 2. मधु-सा ला (अष्ठपदी शतक) 3.जो गोपी मधु बन गयीं (दोहा-शतक) 4. देअर इज ए ऑलपिन (दोहा-शतक) 5.नदिया पार हिंडोलना (दोहा-शतक) 6.पूजता अब छल (हाइकु-शतक)
मुक्तछंद कविता-संग्रह-1. दीदी तुम नदी हो 2. वह यानी मोहन स्वरूप **बाल-कविताएं**- 1.राष्ट्रीय बाल कविताएं
प्रसारण-आकाशवाणी मथुरा व आगरा से काव्य-पाठ
सम्मानोपाधि-'उ.प्र. गौरव', 'तेवरी-तापस', 'शिखरश्री'
अभिनंदन-सुर साहित्य संगम (एटा), शिखर सामाजिक साहित्कि संस्था अलीगढ़
पूर्व अध्यक्ष-राष्ट्रीय एकीकरण परिषद, उ.प्र.शासन,अलीगढ़ इकाई
सम्प्रति-'दैनिक जागरण' से स्वतंत्र पत्रकार के रूप में सम्बद्ध
सम्पर्क-15/109,ईसानगर,निकट-थाना सासनीगेट,अलीगढ़,उ.प्र.
मोबा. 09634551630

जै कन्हैयालाल की

कृष्ण-रूप में कंस जैसे हर शासक के प्रति-
लम्बी तेवरी (तेवर-शतक)

रमेशराज

जन को न रोटी-दाल, जै कन्हैयालाल की!
नेताजी को तर माल, जै कन्हैयालाल की! 1

टूटती बसें या ट्रेन ये प्रगति देश की
रोज-रोज हड़ताल, जै कन्हैयालाल की! 2

खुशियों का मानसून अँखियों से दूर है
सूख गये सुख-ताल, जै कन्हैयालाल की! 3

आदमी का सद्भाव क़ातिलों के बीच में
बकरे-सा है हलाल, जै कन्हैयालाल की! 4

ऊधौ देश पर आप कर्ज विश्व-बैंक का
लाद-लाद हो निहाल, जै कन्हैयालाल की! 5

ऊधौजी हरित क्रान्ति खूब देखी आपकी
पीले-पीले पात-डाल, जै कन्हैयालाल की! 6

खुशियों के नाम पर बीता हर मास यूँ
साल गयी हर साल, जै कन्हैयालाल की! 7

हर ओर बृज बीच आफतें ही आफतें
सूदखोर खींचें खाल, जै कन्हैयालाल की! 8

पहले भ्रष्टाचार ये सौम्य था-सरल था
रूप आज विकराल, जै कन्हैयालाल की! 9

जनता के ऊधौ भये इस युग देखिए
सूख के छुआरे गाल, जै कन्हैयालाल की! 10

खान-पान की भी चीज जेब से परे हुई
कीमतें भरें उछाल, जै कन्हैयालाल की! 11

जो न खाये रोटियाँ, रोटियों से खेलता
उसको सजे हैं थाल, जै कन्हैयालाल की! 12

ताल झील सिन्धु नदी पोखरें हमारी पर
डालते विदेशी जाल, जै कन्हैयालाल की! 13

धर्म का न मर्म-सार सिखलाओ तुम हमें
ज़िन्दगी का अर्थ काल, जै कन्हैयालाल की! 14

भजनों की शाम किन्तु कैबरे के साथ है
चीख रहे कव्वाल, जै कन्हैयालाल की! 15

ऊधौजी जिसे भी मित्र कहते हैं आज हम
चले है कुटिल चाल, जै कन्हैयालाल की! 16

भयमुक्त लोक के नारे देती राजनीति
वक्ष पै टिका के नाल, जै कन्हैयालाल की! 17

आज हैं सुरक्षा-हित धूप-बरसात से
फटे हुए तिरपाल, जै कन्हैयालाल की! 18

मन में हैं काम-क्रोध, लोभ-मोह जिसके
टीके से सजा है भाल, जै कन्हैयालाल की! 19

ज़िन्दगी के दाता रोज़ ज़िन्दगी के प्रश्न को
कल पै रहे हैं टाल, जै कन्हैयालाल की! 20

उसको सुराज कहें बार-बार साँवरे
गुण्डों के जहाँ धमाल, जै कन्हैयालाल की! 21

सत्य को नसीब नहीं झोंपड़ी का सुख भी
घर पाप का विशाल, जै कन्हैयालाल की! 22

सबकुछ गड्ड-मड्ड, राजनीति एक खड्ड
घाल में हू और घाल, जै कन्हैयालाल की! 23

रोशनी के बीच खड़ी असुरों की भीड़ ने
आदमी लिया खँगाल, जै कन्हैयालाल की! 24

सेब-संतरे का जूस आज है कसैली चीज
'कोक' ने किया कमाल, जै कन्हैयालाल की! 25

जिसमें बसी थी एक आस्था की सदी नेक
भूले वह भूतकाल, जै कन्हैयालाल की! 26

जीये आज राजनीति मार के संवेदना
गेंडे जैसी ओढ़ खाल, जै कन्हैयालाल की! 27

ऊधौ आज छायी हर भाव पै विपन्नता
'सोच' हुए कंगाल, जै कन्हैयालाल की! 28

गज के मानिंद झूम-झूम बढ़े भूमि पै
मस्त नेता चले चाल, जै कन्हैयालाल की! 29

जिसकी तिजारियों में जनता के स्वप्न कैद
श्याम को उसी का ख्याल, जै कन्हैयालाल की! 30

अर्चना न देव की, न साधु की, न संत की
आज तो पुजें चँडाल, जै कन्हैयालाल की! 31

बने हैं पुजारी लोग आज यूँ अहिंसा के
बेच रहे मृग-छाल, जै कन्हैयालाल की! 32

पूछे कौन श्याम से, अमरीका मीत क्यों
किसकी कहाँ मजाल? जै कन्हैयालाल की! 33

आज भी अँगूठे दान रोज करें द्रोण को
भील और सनथाल, जै कन्हैयालाल की! 34

फ़ूल के सदृश अब ऊधौ सारे आचरण
हाथ में लिये कुदाल, जै कन्हैयालाल की! 35

नंग करें दंग, बात जब चले लाज की
पूर्ण बनें अरधाल, जै कन्हैयालाल की! 36

जनता की नेत्र-ज्योति छीनने में वो लगे
नाम जो रखें कुणाल, जै कन्हैयालाल की! 37

नेताजी को याद कहाँ देश-प्रेम, देश-भक्ति
भूले दिशा दिगपाल, जै कन्हैयालाल की! 38

सबके ही साथ घटे आज एक हादसा
कौन बचा बाल-बाल, जै कन्हैयालाल की! 39

जनता के सुख रहा ऊधौ कहाँ भाग्य में
आपदा लिखी हैं भाल, जै कन्हैयालाल की! 40

क़ातिलों के बीच शोक, करुणा-दया भरे
कौन पूछता सवाल, जै कन्हैयालाल की! 41

सुख की हरेक कथा बनी आज त्रासदी
ज़िंदगी हुई मुहाल, जै कन्हैयालाल की! 42

वक्त की मार हुई तेज से भी तेजतर
आदमी हुआ निढाल, जै कन्हैयालाल की! 43

शत्रुता की भावना में जिनके सकल सोच
हाथ में लिये गुलाल, जै कन्हैयालाल की! 44

शिक्षा का सरोज ओज कृशकाय, असहाय
बैठे गुरु घनटाल, जै कन्हैयालाल की! 45

जो किरदार आज वार करे रात-दिन
किसकी बनेगा ढाल? जै कन्हैयालाल की! 46

मंच पे चढ़े जो लोग बात करें क्रान्ति की
भवनों में रीतकाल, जै कन्हैयालाल की! 47

मन की व्यथा या पीर कहा कहें ऊधौजी
बाल की खिंचेगी खाल, जै कन्हैयालाल की! 48

दौर है तमाचेदार, बोल रहे अखबार
लाल होंगे और गाल, जै कन्हैयालाल की! 49

सृष्टि के सृजक जो, वे ही आज मौत के
मंत्र को रहे उछाल, जै कन्हैयालाल की! 50

नंग करें दंग-भंग ज़िन्दगी के शोख रंग
ठोंक-ठोंक पठे-ताल, जै कन्हैयालाल की! 51

कैसे होगा मुक्त मन रोग की गिरफ्त से?
खुशियों की हड़ताल, जै कन्हैयालाल की! 52

भूख, प्यास और सह, राम का नाम जप
बोल रहे नन्दलाल, जै कन्हैयालाल की! 53

ऊधौ डालो सत्य के हाथ-पाँव बेड़ियाँ
झूठ को करो बहाल, जै कन्हैयालाल की! 54

श्याम के उलट काम त्रिभुज बनाने को
हाथ गही परकाल, जै कन्हैयालाल की! 55

ब्याहि दईं दुष्टन कूँ नोट भर बेटियाँ
भेज दईं ससुराल, जै कन्हैयालाल की! 56

फाड़ रही महँगाई मुँह दूना-चौगुना
सुरसा-सा विकराल, जै कन्हैयालाल की! 57

सोच से परे का खेल मंदी-भरा दौर ये,
कीमतों में क्यों उछाल? जै कन्हैयालाल की! 58

'विकरम' मौन औ' सवाल ही सवाल हैं
डाल-डाल 'वैताल', जै कन्हैयालाल की! 59

लोग मरें भूख से श्याम का निजाम ये
चोर भये मालामाल, जै कन्हैयालाल की! 60

आज़ादी के नाम पै बहेलियों के हाथ में
पंछियों की देखभाल, जै कन्हैयालाल की! 61

लू से भरी आंधियां हैं जनता के भाग में
श्याम बसे नैनीताल, जै कन्हैयालाल की! 62

त्याग प्रेम, याद करें भाव आलू-प्याज के
आज सोनी-महिवाल, जै कन्हैयालाल की! 63

न्याय की गुहार पै खायें लात-लीतरे
ब्रज के ये गोपी-ग्वाल, जै कन्हैयालाल की! 64

मुंसिफों ने वाद सुने श्याम के सुराज में
कानन में रुई डाल, जै कन्हैयालाल की! 65

ऊधौ नीति, प्रीति, रीति छल की प्रतीति-सी
और न करो निहाल, जै कन्हैयालाल की! 66

अश्व सहें धूप-ताप और कोप शीत का
गदहों को घुड़साल, जै कन्हैयालाल की! 67

आज हैं मलिन वस्त्र सत्य के बदन पै
झूठ-तन मणिमाल, जै कन्हैयालाल की! 68

देख ये निजाम आज राधिका भी बोलती-
आये क्रांति का उबाल, जै कन्हैयालाल की! 69

बतलाओ सरकारी चाहे जिस खेत को
आपके हैं लेखपाल, जै कन्हैयालाल की! 70

ऊधौ खोदिए कबर गाड़ दीजे सत्य को
हाथ आपके कुदाल, जै कन्हैयालाल की! 71

कंस जैसे दंश लिये श्याम आज घूमते
ऐसी न मिले मिसाल, जै कन्हैयालाल की! 72

कुछ को ही लाभ देना रीति घनश्याम की
आमजन को अकाल, जै कन्हैयालाल की! 73

धन्य है उदारवाद! देश में बनी है आज
दानवों की ससुराल, जै कन्हैयालाल की! 74

ऊधौ मत पूछिएगा हाल आज देश का
प्रेत बैठे डाल-डाल, जै कन्हैयालाल की! 75

जीत गये हर जंग डाल रंग मोहना
खोटी गिन्नियाँ उछाल, जै कन्हैयालाल की! 76

ऊधौ अब दिन-रात काटे हैं गरीब ने
घास-फूँस खाय छाल, जै कन्हैयालाल की! 77

प्रतिभा से युक्त लोग खाते फिरें ठोकरें
मौज लूटें नक्काल, जै कन्हैयालाल की! 78

कैसे उपचार कैसे समाधान आपके?
मन में उठें सवाल, जै कन्हैयालाल की! 70

देखत लगै न भली ऊधौ अब आपकी
सत्य की कदमताल, जै कन्हैयालाल की! 80

'भेद डाल राज करो' बनी नीति आपकी
खेल आपका विशाल, जै कन्हैयालाल की! 81

श्याम पात-पात चलें, रोज छलें ब्रज को
ऊधौ हैं फुलक-डाल, जै कन्हैयालाल की! 82

छल भरी चरपरी हर बात आपकी
कितना करें मलाल? जै कन्हैयालाल की! 83

ऊधौ पांच साल बाद जब हैं चुनाव तो
आप हैं बड़े दयाल, जै कन्हैयालाल की! 84

श्याम के कुशासन की, छल-भरे रूप की
ऊधौ बनिए न ढाल, जै कन्हैयालाल की! 85

मोहन के राज बीच जनता के हाल ये-
भूख, आपदा, अकाल, जै कन्हैयालाल की! 86

ऊधौ सच बात से रहे अपच आपके
सत्य की ही खींचो खाल, जै कन्हैयालाल की! 87

दूर का करोगे दुक्ख, सुक्ख कहा लाओगे?
और दोगे फंद डाल, जै कन्हैयालाल की! 88

बगुला भगत आप, मान गये ऊधौजी
आपके तिलक भाल! जै कन्हैयालाल की! 89

सत्य की न खोलो आप आज पोथी-पत्तरा
और न गलेगी दाल, जै कन्हैयालाल की! 90

हमसे ही श्याम करें प्रेम-भरी बतियाँ
हमें ही करें हलाल, जै कन्हैयालाल की! 91

जहाँ-जहाँ जल-बीच नाचती मछलियाँ
छोड़ दिये घड़ियाल, जै कन्हैयालाल की! 92

रीतिपाल, प्रीतिपाल, सच्चे प्रतीतिपाल
देख लिये नीतिपाल, जै कन्हैयालाल की! 93

नेह की न एक बूँद पास घनश्याम के
सूख गयी डाल-डाल, जै कन्हैयालाल की! 94

फल-मेवा ठूँसे जायँ नरिहा की नरि में
घूरे पै पड़े गुलाल, जै कन्हैयालाल की! 95

ऐसे दबे पाँव दुःख वृद्ध करे सुख को
जैसे हो सफेद बाल, जै कन्हैयालाल की! 96

जनता के बीच जय इसलिए आपकी
पीठ से टिकाओ नाल, जै कन्हैयालाल की! 97

घने अन्धकार बीच रोशनी के प्रश्न को
कल पै रहे हो टाल, जै कन्हैयालाल की! 98

मछली-सी ज़िन्दगी ऊधौजी हमारी और
आप बने घड़ियाल, जै कन्हैयालाल की! 100

ईद घर आपके किन्तु हमें देखिये
बकरे-से हैं हलाल, जै कन्हैयालाल की! 100

ऊधौ मनमोहन से बोल देना राम-राम
बैठे कान रुई डाल, जै कन्हैयालाल की! 101

ऊधौ सुनो भय भरे आपके निजाम का
कल होगा इन्तकाल, जै कन्हैयालाल की! 102

भाव-भाव घाव भरा, कटु अभिव्यक्तियाँ
आज तेवरों में ज्वाल, जै कन्हैयालाल की! 103

तेवरी 'विरोध-भरी' वर्णिक छंद में
क्रान्ति की लिये मशाल, जै कन्हैयालाल की! 104

तेवरी के तेवरों में आज ये संकेत हैं
ऊधौ खून में उबाल, जै कन्हैयालाल की! 105

रस-परम्परा में एक नये रस की खोज

विरोध-रस

शोधकर्त्ता-रमेशराज, कृतिमूल्य-सौ रुपये

विरोध-रस क्या है?

जब किसी आश्रय में तिरस्कारादि के कारण स्थायी भाव, 'आक्रोश' जाग्रत होता है तो वह आलंबनों के प्रति केवल असहमति ही व्यक्त नहीं करता, बल्कि उसके अनुभावों में धिक्कारना, अपशब्द बोलना, निंदा करना स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है, जो अन्ततः विरोध-रस की निष्पत्ति का सूचक है।

'विरोध-रस' विद्वानों की दृष्टि में-

कुछ भाव तो ऐसे हैं कि आलंबन बदल जाने से वे स्वतः स्वतंत्र रूप धारण कर लेते हैं। 'प्रेम' ऐसा ही मानो सत्य है। कुछ संचारी भी इतने सशक्त हो जाते हैं कि रस का परिपाक हो जाता है। परम्परत रूप से आपके द्वारा प्रवत्त **'विरोध-रस'** रौद्र रस के अन्तर्गत आता है, परन्तु वह विरोध जिसमें व्यवस्था के प्रति अथवा किसी सामाजिक बुराई के प्रति गुस्सा या 'आक्रोश' होता है, वह व्यक्तिगत क्रोध से सर्वथा भिन्न है।... आपकी स्थापना से एक स्पष्ट मार्ग प्रशस्त होता है। -**डॉ. परमलाल गुप्त**

'विरोध-रस' पर सार्थक चर्चा चल रही है। अनवरत प्रयास निकट भविष्य में रंग दिखायेगा।-**डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'**

'विरोध-रस' पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए।... इससे साहित्य की परंपरा विकसित होगी -**डॉ. हरेराम पाठक**

'विरोध-रस'- खूब! आपके कार्य शोधपरक। -**अशोक अंजुम**

'विरोध-रस' के 'अनुभाव', 'विभाव', 'संचारी भाव' पर शोधपरक लेख पठनीय।-**डॉ. शारदा प्रसाद 'सुमन'**

'विरोध-रस' पर सामग्री उत्तम। -**डॉ. गणेशदत्त सारस्वत**

'विरोध'शास्त्रीय दृष्टि से रस ही है।-**डॉ. नटवर नागर**

विरोध-रस शोधपरक। -**डॉ. ज्ञानवती दीक्षित**

'विरोध-रस' की नयी अवधारणा और उसके विविध शास्त्रीय पक्षों की व्याख्या उत्साहवर्द्धक। आपका यह प्रयास हिन्दी जगत की सामयिक हलचलों में सम्मिलित किया जाना चाहिए। -**कृष्णकांत 'एकलव्य'**

शोधार्थियों के लिये एक महत्वपूर्ण पुस्तक

विचार और रस

(रस-निष्पत्ति का वैचारिक विवेचन)

लेखक-रमेशराज

राष्ट्रीय बाल कविताएँ

कवि-रमेशराज

प्राप्ति स्थल-बजरंग प्रकाशन, सागरपुर, दिल्ली

महत्वपूर्ण तेवरी संग्रह

(१) अभी जुबां कटी नहीं	संपादक-रमेशराज
(२) कबीर ज़िन्दा है	संपादक-रमेशराज
(३) इतिहास घायल है	संपादक-रमेशराज
(४) एक प्रहारः लगातार	तेवरीकार-दर्शन बेज़ार
(५) देश खण्डित हो न जाए	तेवरीकार-दर्शन बेज़ार
(६) ये ज़ंजीरें कब टूटेंगी	तेवरीकार- दर्शन बेज़ार

सार्थक-सृजन, १५-१०९, ईसानगर,

निकट-थाना सासनीगेट, अलीगढ़